सपनो की उड़ान

कुर्सी क्या है एक कुर्सी की पहचान
लकड़ी की चार पाई, एक बेजान
बेजान लेकिन, है इसमे एक अलग सी जान ।।
नहीं कर पा रहा कोई इसकी पहचान
बदलती - दिन बदलती रात जैसे,
बदलती है इसकी पहचान ।।

छोटा समझा जाता जब इसपे बैठता किसान
राष्ट्रपति बैठे तो इसकी एक अलग पहचान
नहीं समझ पाता एक आम इंसान
क्या है एक कुर्सी की पहचान ।।

जिसे पाने के लिए लगा देते पूरी जान
इसी उलझन में उलझा है पूरा जहान
छोटी सी कुर्सी, एक बेजान ।।
इसकी कुछ अलग पहचान

बैठो तुम बस इसपे बना देगा तुमको महान
यही है एक कुर्सी की पहचान।।